

121- देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजन (14)

(रचयिता - वृन्दावनदास)

देवशास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थकर ध्याय ।

सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् । (इति आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् । (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । (सन्निधिकरणम्)

अनादिकाल से जग में स्वामिन, जल से शुचिता को माना ।

शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहीं पहचाना ॥

अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ ।

विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है ।

अनजाने अब तक मैंने, पर मैं की झूठी ममता है ॥

चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।

विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय पद बिन फिरा, जगत की लख चौरासी योनी में ।

अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंङ लाया मैं ॥

अक्षयनिधि निज की पाने अब, श्रीदेवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ ।

विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है ।

मन्मथ बाणों से बिन्ध करके, चहुँगति दुःख उपजाया है ॥

स्थिरता निज में पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।

विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्-रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शान्त हुई ।

आतमरस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ॥

सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
 विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः
 क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जड़ दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
 निजगुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अंधियारा ॥
 ये दीप समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
 विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो
 मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी ।
 निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी ॥
 उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
 विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त
 सिद्धपरमेष्ठिभ्योअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 पिस्ता बादाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया ।
 आतमरस भीने निजगुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया॥
 अब मोक्ष महाफल पाने को, श्रीदेव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
 विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो
 मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 अष्टम वसुधा पाने को, कर मैं ये आठों द्रव्य लिये ।
 सहज शुद्धस्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये ॥
 ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
 विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो
 अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थकर, सिद्धप्रभु भगवान ।
 अब वरणूँ जयमालिका, करूँ स्तवन गुणगान ॥१॥
 नसे घातिया कर्म अर्हंत देवा, करें सुर-असुर नर-मुनि नित्य सेवा ।
 दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी, छियालीस गुण युक्त महाईश नामी ॥
 तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्ष-दानी ।
 अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैन वाणी ॥
 विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश-ज्ञान भण्डार समता अराधूँ ॥

नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी ॥
 विदेह क्षेत्र में तीर्थकर बीस राजे, विहरमान वंदू सभी पाप भाजे ।
 नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी ॥
 देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे ।
 पूजन ध्यान गान गुण करके, भव सागर जिय तर ले रे ॥
 ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो
 अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 भूत भविष्यत वर्तमान की तीस चौबीसी में ध्याऊँ,
 चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक के मन लाऊँ ।
 ॐ ह्रीं त्रिकालगततीसचौबीसीत्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं ।
 चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नाशन हैत ।
 कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक के राजत हैं जिन बिम्ब अनेक ॥
 चतुर निकाय के देव जजें ले अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत ।
 निज शक्ति अनुसार जजूं मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत ॥
 ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योअर्घ्यं निर्व० ।
 पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार ।
 देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म की नाशन हार ॥
 पंच महागुरु सुमरन करके, कायोत्सर्ग करूं सुखकार ।
 सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना जाऊँ गा अब मैं भव पार ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्
 (नौ बार णमोकार मंत्र जपे)